

Govt. Degree College, Bagah-1 (W. Champaran)

Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Muzaffarpur (Bihar)

B.A. Part-1 (Hons.)

Paper - 1

Topic

वायुराशि (Airmass)

Date

12/04/2021

Dharmesh nanda
Assistant Professor (G)
Geography Department

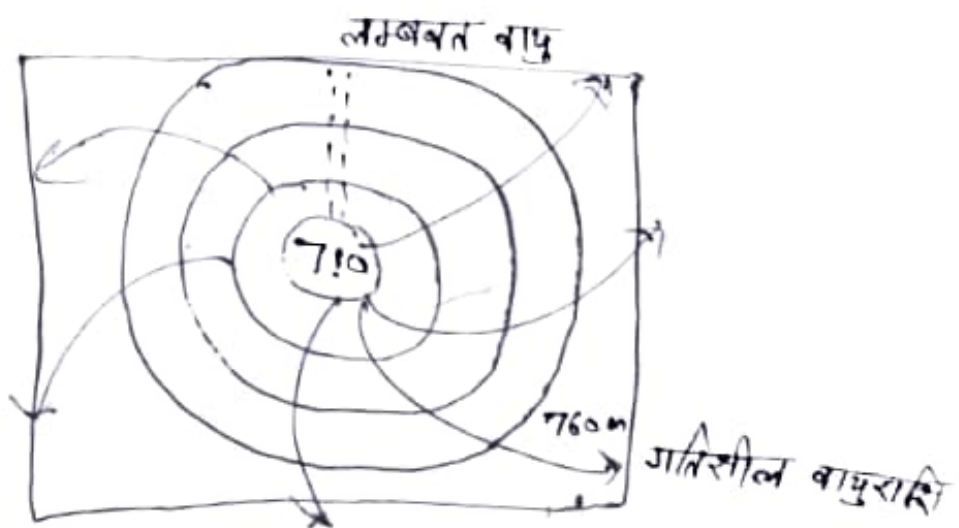
वायुराशी (Air mass)

वायुमंडल के उस विस्तृत भाग को वायुराशी कहते हैं जिसमें क्षैतिज दृष्टि से तापमान और आर्द्रता एवं वायुमंडलीय दशाओं में समरूपता पाया जाता है।

वायुराशी का फैलाव उस सीमा तक माना जाता है जहाँ तक के समानता के तत्व मौजूद होते हैं। जब इसमें असमानता के तत्व मिलने लगता है तब यह स्वीकार लिया जाता है कि वह वायुराशी की सीमा समाप्त हो चुकी है।

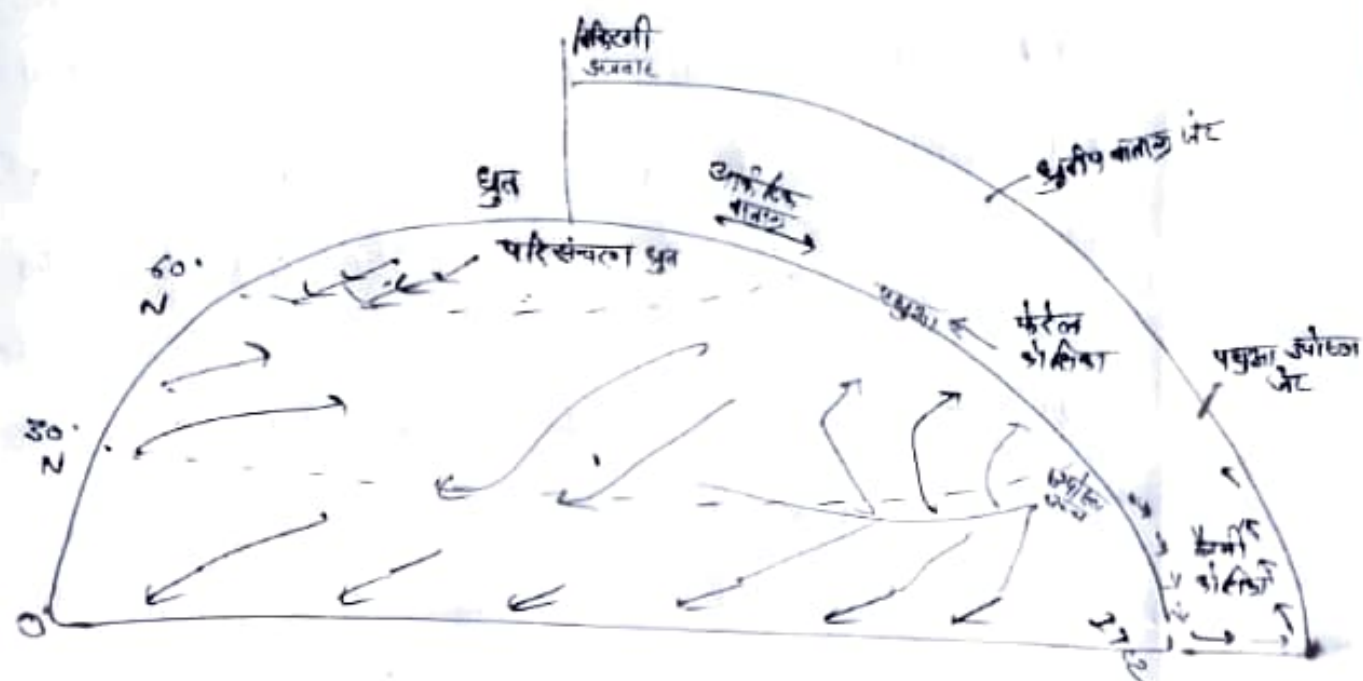
विश्व में इस प्रकार के कई वायुराशी मिलते हैं।

जिनकी वायुमंडलीय दशाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं और आपस में मिलने या अंतरक्रिया से वाताग्र, चक्रवात, बादल निर्माण आदि वायुमंडलीय परिघटनाओं का विकास होता है।



उत्पत्ति क्षेत्र :-

वापुराशि



वापुराशि की उत्पत्ति कई परिस्थितियों के कारण होती है जैसे पृथ्वी पर द्रव्यत्व की प्राप्ति की मात्रा अलग-अलग होती है और धरातल पर जल एवं स्थल का वितरण भी काफी विषम है इनकी परिस्थितियों में पृथ्वी पर कई वापुराशि का जन्म होता है जो जिनमें आपस में अंतर होती है इसी प्रकार में वापुराशि की उत्पत्ति के लिए निम्नलिखित तीन दशाई होना आवश्यक है -

- (i) विस्तृत किंतु समान स्वभाव वाला क्षेत्र होना चाहिए यह विस्तृत क्षेत्र या तो स्थलीय या तो जलजल होना चाहिए क्योंकि जल और स्थल मिले हुए ही तो उनमें

तापमान और आर्द्रता में समरूपता ही ही नहीं सकती है।

- (ii) वायुमंडल सबधी दशाएं लम्बी अवधि तक समान एवं स्थिर होना चाहिए ताकि वायुमंडल में धरातल की आर्द्रता एवं तापक्रम समाहित हो सके।
- (iii) यह क्षेत्र उच्च वायुदाब वाला, अपसरण की पटी हो जहाँ वायु में स्थिरता हो।

इस प्रकार के छः उत्पत्ति क्षेत्र भूपटल पर मिलते हैं जो निम्नलिखित हैं -

- (i) ध्रुवीय सागरीय क्षेत्र - अटलांटिक एवं प्रशांत महासागरीय के उत्तरी क्षेत्र।
- (ii) ध्रुवीय तथा आर्कटिक महाद्वीपीय क्षेत्र - यूरेसिया तथा उत्तरी अमेरिका का हिमाच्छादित भाग।
- (iii) उष्ण कटिबंधीय महाद्वीपीय क्षेत्र - सहारा, एशिया, मध्य ए.स. आ. भारत का पश्चिमी भाग।
- (iv) उष्ण कटिबंधीय सागरीय क्षेत्र - हिन्द, आंध्र एवं प्रशांत महासागर।
- (v) भूमध्यरेखीय क्षेत्र - व्यापारिक पवनों के बीच का क्षेत्र।
- (vi) मानसूनी क्षेत्र - द० पू० एशिया



- (i) वायुमंडलीय दशाएं नैवे समय तक स्थिर रहनी चाहिए।
- (ii) उत्पत्ति क्षेत्र समरूप होना चाहिए सागरीय या स्थलीय
- (iii) उत्पत्ति क्षेत्र में वायु का अपसरण (Divergence) होना चाहिए
- (iv) विशिष्ट तापमान एवं आर्द्रता से युक्त विस्तृत क्षेत्र

MP

CP

MT

CT

वायुराशि की विशेषताएं

- (i) समताप तथा समभार रेखाएं एक सम दूरी पर एक-दूसरे के समानान्तर होती हैं इससे वायु को बैरोहोमिक एयर कक्षे हैं।
- (ii) श्रौत क्षेत्र में वायु बहने की प्रवृत्ति रखती हैं।
- (iii) वायुराशि के सीमान्त के हवाएं अपनी विशेषताओं को असुग रखते हुए निम्न भार क्षेत्र की तरफ प्रवाहित होती हैं। यह प्रवाह प्रतियक्रवातीय होता है।
- (iv) वायुमंडलीय आर्द्रता की कमी होती है तथा वायुमंडलीय दृश्यता अधिक होती है क्योंकि धूलकण की कमी होता है। बादलों का अभाव होता है इसलिए मौसम साफ होता है।

वायुराशि का वर्गीकरण

सभी प्रदेशों में वायुराशि एक समान नहीं है। अतः जलवायु वैज्ञानिक - भौतिक वैज्ञानिक तथा भूगोलवेत्ताओं द्वारा वायुराशि का वर्गीकरण का प्रयास किया गया। बड़ी कठिनाई में वायुराशि के लिए सांकेतिक शब्दावली का प्रयोग किया गया। वायुराशि के वर्गीकरण के तीन प्रमुख आधार हैं -

- (i) अक्षांशीय (ii) उच्चावच (iii) तापमान

अक्षांशीय दृष्टि से वायुराशि को दो भागों में बाँटा है -

- (i) ध्रुवीय वायुराशि (P)
(ii) उष्ण कटबंधीय वायुराशि (T)

उच्चावच की दृष्टि से वायुराशि को दो भागों में बाँटा है :

- (i) महाद्वीपीय वायुराशि (C)
(ii) महासागरीय वायुराशि (M)

तापीय दृष्टि से वायुराशि को दो भागों में बाँटा है

- (i) गर्म वायुराशि (W)
(ii) ठंडी वायुराशि (K)